बिस्मिल्लाह हिर रहमान निर रहीम

अल्लाह के रास्ते में निकाल कर 6 सिफात पर अमली मश्क कराई जाती है जिस पर अमल करने से पूरे दिन पर चलना आसान हो जाता है ।

1. **ईमान**
2. **नमाज़**
3. **इल्म व ज़िक्र**
4. **इकराम ए मुस्लिम**
5. **इखलास ए निययत**
6. **दावत ए तबलीग़**

और

परहेज के तौर पर लायानी से बचना ।

ईमान :

अल्लाह के अवामिर को हज़रत मुहम्मद ﷺ के तरीक़े पे पूरा करने में दुनिया और आखिरअत की तमाम कमियाबी का यकीन करना ।

दावत :

अल्लाह की कुदरत , अल्लाह की अजमत , अल्लाह की रूबिबियत , अल्लाह की वहदानियत इस को खूब केहना और नबियों के और सहाबा के उन वाक़िआत को केहना जिस में अल्लाह ने ज़ाहिर के खिलाफ गैबी मदद और नुसरत कि।

माश्क :

जब हम ज़ाहिर के खिलाफ उन वाक़िआत को कहेंगे तो शैतान हमारे दिलो में

वस्वसे डाले गा तो अपने दिल में यही कहना यही सच है यही हक है , यही सच है यही हक है , यही सच है यही हक है ।

दुआ :

दुआ में ईमान की हलावत , ईमान की हकीकत , ईमान की सलामती , ईमान सहाबा और ईमान पर खात्मा ।

नमाज़ :

अल्लाह ताला के ज़ाते आली से बारह रास्त इसतेफादा हासिल करने में ये नमाज़ हमारी यकीनी सबब बन जाए !

दावत :

उम्मत में चल फिर कर नमाज़ पर दुनिया और आखिरअत के नफे को कहना और हुज़ूर ﷺ और सहाबा के उन वाक़िआत को कहना जिस में उन्हों ने दो दो रकात नमाज़ पढ़ कर अपने मसले को हल करवाया ।

मश्क़ :

दो दो रकात नमाज़ पढ़ कर ज़ाहिर और बातिन को दुरुस्त करना ।

- ज़ाहिर में वज़ू से लेकर सलाम फेरने तक जितनी भी करने और पढ़ने वाली चीज़े है सही

सही और पूरा पूरा अदा करना ।

❖ बातीन का आला दर्जा ये है कि मै अल्लाह को देख रहा हूं और अदना दर्जा ये है कि अल्लाह मुझे देख रहा है , इस कैफियत के साथ नमाज़ को पढ़ना ।

दुआ :

दुआ में नमाज़ की हकीकत , नमाज़ की हालावत , नमाज़ ए सहाबा को मांगना जो अल्लाह के बारगाह में कुबूल हो ।

इल्म :

अल्लाह के अवामीर को हुज़ूर ﷺ के तरीक़े पर पूरा करने के गर्ज़ से इस बात की तहकीक करना के इस हाल में मेरा अल्लाह मुझ से क्या चाह रहा है ।

दावत :

उम्मत में चल फिर कर इल्म पर दुनिया और आखिरअत के नफे को खूब कहना ।

मश्क़ :

- मसाइल वाला इल्म अपने मसलक के मोएतेबर उल्मा से पूछ कर करना चाहे शादी बिया का हो , मौत मट्टी का हो , कारोबार का हो पूछ कर करना ।
- फज़ाइल वाला इल्म फज़ाइल की किताबों से हासिल करना ।

दुआ :

अल्लाह से इल्म की हकीकत , इल्म की हलावात मांगना और अल्लाह से ऐसे इल्म से पनाह मांगना जो बेहस और मुबाहिसे का सबब बने ।

ज़िक्र :

अल्लाह के अवामिर को पूरा करने में अल्लाह वाले ध्यान के साथ मशगूल होना यानी मेरा अल्लाह मेरे सामने में है और वो मुझे देख रहा है ।

दावत :

उम्मत में चल फिर कर ज़िक्र पर दुनिया और आखिरअत के नफे को खूब कहना ।

मश्क़ :

सुबह और शाम की तस्बीह , मस्नून दुवाओं का एहतेमाम करना और हाफ़िज़ ए क़ुरान है तो रोज़ के तीन पारे और अगर नाज़रा है तो रोज़ का एक पारा नहीं आता तो उतना वक़्त क़ुरान को सीखने में लगाना ।

दुआ :

अल्लाह से ज़िक्र के हालावात , ज़िक्र की हकीकत और ऐसी ज़बान जो अल्लाह के ज़िक्र में हमेशा तर हो ।

इकराम ए मुस्लिम :

अल्लाह के आवामीर को हुज़ूर ﷺ के तरीक़े के साथ साथ पूरा करने में मुसलमानों कि नोइयात का लिहाज़ करना ।

दावत :

उम्मत में चल फिर कर हर मुसलमान को उसकी की क्या क़दर व कीमत है उसको समझाना और हुज़ूर ﷺ और सहाबा के इसार और हमदर्दी वाले वाक़िआत को कहना ।

मश्क़ :

अपने साथियों कि खिदमत करते हुवे अपने अंदर तवाज़ह (नरम मिज़ाज) को पैदा करना।

दुआ :

हुज़ूर ﷺके अखलाक़ को मांगना और अपने अंदर नरमी को अल्लाह से मांगना ।

इखलास ए निय्यत :

अल्लाह के आवामिर को मेहज़ अल्लाह की रज़ा के लिए पूरा करना ।

दावत :

उम्मत में चल फिर कर इखलास की एहमियत को समझाना ।

मश्क़ :

हर अमल में अपनी निय्यात को टटोलना ।

शुरू में , दरमियान में और आखिर में ।

नमाज़ में शुरू और आखिर में निय्यात को टटोलना के में ये अमल ख़ालिस अल्लाह के लिए कर रहा हूं ।

दुआ :

इखलास की हकीकत को मांगना और नाम व नमूद और शोहरत - दिखलावे से पनाह मांगना ।

दावत ए तबलीग़ :

अपने यक़ीन और आमाल की दुरुस्तागी के लिए और सारे इंसानों को सही यक़ीन पर लाने के लिए हुज़ूर ﷺकी मेहनत को पूरी दुनिया में ज़िंदा करने की कोशिश करना ।

दावत :

उम्मत में चल फिर कर इस काम की एहमियत और ज़रूरत को समझाना के इस काम के करने पर हुज़ूर ﷺऔर सहाबा ने जो मूजाहेदे इख्तियार किए उनको समझाना ।

मश्क़ :

इस काम के अंदरूनी और बेरूनी तकाज़े को जान , माल और वक़्त के साथ पूरा करना और सालाना चार माह और अपनी मस्जिद को 24 घंटे आबाद करने की फिकर करना ।

दुआ :

इस काम कि हकीकत को मांगना , काम को करने की हिकमत को मांगना , काम को करने की हिम्मत को मांगना और इखलास को मांगना ।

लायानि से बचना :

अपनी ज़िन्दगी को सुन्नत और सादगी को पैदा करना ।

दावत :

उम्मत में चल फिर कर सुन्नत की एहमियत को और ज़रूरत को समझाना।

मश्क़ :

अपनी तमाम ज़रूरत को जैसे मिसाल के तौर पर : खाना , सोना , नहाना ये सुन्नत तरीक़े पर पूरा करना ।

दुआ :

सुन्नत पर इस्तेकामत को मांगना ।